Notification No: 518/2022

Date of Award: 02-08-2022

Research Scholar: Zarina Diwan

Supervisor: Prof. Indu Virendra

Department: Hindi

Title: Ramnika Gupta Ke Sahitya Mein Asmitamoolak Vimarsh Ka Adhyayan

संक्षिप्त शोध सार

साहित्य और समाज से जुड़ी आदिवासी, दलित, स्त्री संबंधी सभी मुद्दों पर बेबाक ढंग से विचार विमर्श करने वाली रमणिका गुप्ता जी का लेखन मूलतः शोषित, पीड़ित समूह के संघर्षों पर केंद्रित है। उनका अनुभव जगत विशेष रूप से स्त्री के संघर्षों का संसार है। जहां खटने कमाने वाली दलित और आदिवासी स्त्रियाँ उनके संघर्षों को धार देने, उनके संगठन को नेतृत्व प्रदान करने के लिए अपनी वर्ग सीमाओं को तोड़ती हुई उनसे आ मिली हैं। इनके साहित्य की सभी नायिकाएँ रमणिका जी जैसी ही 'आपहुदरी' हैं। सामाजिक धरातल पर एक चेतना संपन्न स्त्री के रूप में सभी श्रमजीवी नायिकाएं कहीं व्यक्तिगत स्तर पर तो कहीं सामूहिक स्तर पर संगठन के माध्यम से संघर्ष करती, अपनी पहचान बनाती दिखाई देती हैं। प्रथम दृष्टि में परिस्थितियों की शिकार बेचारी सी नायिकाएं लगती हैं। लेकिन ये बेचारी सी नायिकाएँ स्वयं के चुने हुए रास्ते के दुष्परिणामों को लंबे समय तक भोगने की बजाए उन समस्याओं से उबरने के लिए कठोर निर्णय लेने में कहीं भी पीछे नहीं दिखाई देती बल्कि स्त्री संघर्ष की एक नई मशाल ही जलाती दिखाई देती हैं।

स्त्री मुक्ति की सबल पक्षधर रमणिका गुप्ता जी अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री, दलित और आदिवासी अस्मिता और गति को अवरुद्ध करने वाली कुप्रथाओं की गहरी जांच-पड़ताल भी कर लेना चाहती हैं।

निजी तौर पर रमणिका गुप्ता जी मर्दों से घृणा करने की समर्थक नहीं हैं बल्कि मनुष्य के रूप में उनकी स्वतंत्र इकाई का वे आदर करती हैं। उनके इस विचार का निर्वाह उनके सम्पूर्ण साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ट्रेड-यूनियन और राजनीति से लेकर साहित्य की विभिन्न विधाओं में समकालीन सामाजिक परिस्थितियों, पारिवारिक संबंधों की सत्यता, सामंती परिवारों के दोहरे मापदंड, समकालीन राजनीति परिवेश के अकाट्य सत्य, स्त्री हृदय की वेदना आदि को एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

अपने ढंग और अपने ढर्रे पर चलने वाली पंजाब के सुनाम शहर से निकलकर बिहार की सांसद और एक जुझारू सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता तक पहुंच गई रमणिका जी की लेखनी पूरी शिद्दत व तत्परता से स्त्री, दलित एवं आदिवासी समाज की आवाज बनकर साहित्य की सभी विधाओं में अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार बनकर गूंज उठी है। वंचित वर्ग के लोगों को न्याय दिलाने के सपने को सच करने के लिए वे पूरी जीवन्तता, उत्साह और उम्मीद के साथ निरंतर कार्य करती रहीं। अस्मिता संबन्धित विमर्श को नई दिशा देने में इनका साहित्य एक अमूल्य रत्न है।